

पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय भा. ति. सी. पु. बल

देहरादून

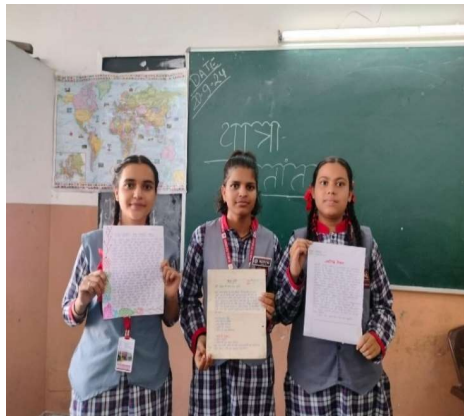
राजभाषा पत्रिका (२०२४-२५)

काव्यांजलि



हिंदी पखवाडा

Commented [h1]:



संपादक की कलम से.....



नमस्कार !

विद्यालय परिवार के लिए अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय भारत तिब्बत सीमा पुलिस देहरादून अपनी ई राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है।

यह पत्रिका विद्यार्थियों की उभरती हुई प्रतिभा को एक मंच प्रदान करने का छोटा सा प्रयास है। छात्रों की रचनात्मकता, विचारों और प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। छात्रों, शिक्षकों और व्यापक स्कूल समुदाय के बीच संचार और सहयोग को बढ़ावा देती है। स्कूल पत्रिका छात्रों के लेखन और साक्षरता कौशलों को बढ़ावा देती है। पत्रिका में योगदान करने से छात्रों का आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ता है। मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ कि मुझे राजभाषा पत्रिका के संपादन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

सभी शिक्षक एवं छात्रों का जिन्होंने पत्रिका के निर्माण में प्रत्यक्ष या परोक्ष किसी भी रूप में अपना योगदान दिया, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

कविता शर्मा

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका

हिंदी

प्राचार्य की कलम से.....



नमस्कार !

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि पी एम श्री केंद्रीय विद्यालय भारत तिब्बत सीमा पुलिस सीमाद्वार

देहरादून अपनी राजभाषा ई-पत्रिका सत्र 2024-25 का प्रकाशन कर रहा है। मातृभाषा के प्रति प्रेम और समर्पण को दर्शाती हुई

यह पत्रिका विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल तथा उनकी स्वरचित रचनाओं के प्रकाशन का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

पत्रिका में संकलित प्रत्येक रचना हृदय में सकारात्मकता का संचार करती है। पत्रिका का प्रकाशन समस्त विद्यालय परिवार के

अथक प्रयास का उत्कृष्ट परिणाम है। इस सराहनीय प्रयास के लिए समस्त विद्यालय परिवार को बहुत-बहुत बधाई एवं

शुभकामनाएं।

प्राचार्य

श्री संजय कुमार

उपप्राचार्य की कलम से



नमस्कार

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि विद्यालय अपनी ई राजभाषा पत्रिका (2024-25) का प्रकाशन कर रहा है।

इस विद्यालय के अनमोल रत्नों की अपार प्रतिभा और क्षमताओं की एक झलक, साथ ही इन रत्नों की सभी उपलब्धियों का संकलन, संकलन, हमारी हिंदी स्कूल पत्रिका है। यह दिखाने का एक मंच है कि हम कहाँ पहुँचे हैं और हम कहाँ पहुँचना चाहते हैं। यह शानदार और गौरवशाली वर्ष का प्रतिबिम्ब है जो अभी-अभी साहसपूर्वक और आत्मविश्वास के साथ अगले वर्ष की ओर अग्रसर हुआ है।

राजभाषा पत्रिका लेख, कहानी, कविता, कलाकृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति के अन्य रूपों में योगदान दे सकते हैं। इस राजभाषा पत्रिका को संकलित करने के लिए एक अद्भुत काम करने के लिए संपादकीय टीम को धन्यवाद।

पायल लाल

उपप्राचार्या

पी एम श्री के वि भारत तिब्बत सीमा पुलिस देहरादून

अनुक्रमणिका

कविताओं का नाम :

1. कैसी तन्हाई ?

शिक्षा का महत्व

3. वाणी

4. स्त्री

5. नृत्य की धड़कन पुरुष दृष्टि

6. शक्ति का स्वरूप है नारी

7. केंद्रीय विद्यालय संगठन

8. लक्ष्य

9. बेटी बचाओ

10. शिक्षक

11. वक्त नहीं

12. ना डरो कभी

13. जीवन दाता

14. धरती मां

15. याद है नानी का घर

कैसी तन्हाई?

तन्हाई से कैसा डर है, होती क्या तन्हाई है।

मेरे साथ हुनर है मेरा, फिर कैसी तन्हाई है।।

सबसे पहले रब है मेरा,

रससे मांगूं सबकी खैर।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,

यहीं किसी से मुझको बैर।

दिल में सबके एक ही रब है, एक यही सच्चाई है।

मेरे साथ हुनर है मेरा, फिर कैसी तन्हाई है।।

तुलिका कभी उठाकर अपनी,

रंगों से खेलूं मैं खेल।

कलम उठा कर कभी लिखूं मैं,

बना “गीत” लफ़्ज़ों का मेल।

रंगों और अल्फाज़ों की, दौलत मेरी कमाई है।

मेरे साथ हुनर है मेरा, फिर कैसी तन्हाई है।।



सभी एक हैं इस धरती पर,

सबको मन से अपनाओ।

अपने किसी हुनर से तुम भी,

फैज़ वतन को पहुंचाओ।

आपस में हम लड़े अगर तो, जग में भी रुस्वाई है।

मेरे साथ हुनर है मेरा, फिर कैसी तन्हाई है।।

कुदरत ने जो सबको बख्शा,

हुनर” उसे तुम पहचानो।

तन्हाई में खुद को ढूंढो,

घोड़ा खुद को भी जानो।

मूल ही जाओगे फिर तुम भी, होती क्या तन्हाई है।

मेरे साथ हुनर है मेरा, फिर कैसी तन्हाई है।।

कहकशां

कहकशां

कहकशां

कहकशां

कहकशां

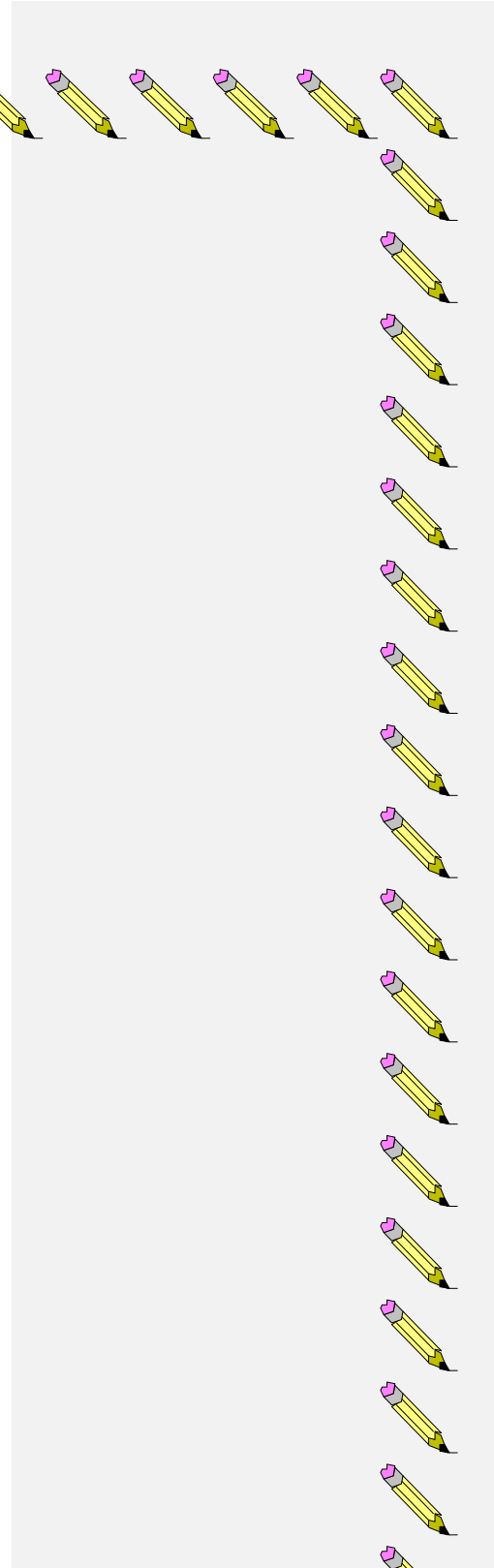
कहकशां

कहकशां

कहकशां

कहकशां

कहकशां



शिक्षा का महत्व

मानव जीवन में अनपढ़ व्यक्ति का नहीं कही कोई मान है

शिक्षित व्यक्ति ही पाता हर जगह सम्मान है

सुगुणों युगों से देखा पाया

शिक्षित व्यक्ति का अपना स्वाभिमान है

शिक्षित व्यक्ति की मनोवृत्ति में दिखता एक सौम्य सरल इंसान है

मातृ भाषा के पूर्ण ज्ञान पर

उसको बड़ा अभिमान है

एक शिक्षित व्यक्ति का देश हमेशा करता यशोगान है

यस देश में शिक्षा का स्तर ऊंचा और महान है

उस देश की सदैव बढ़ती आन बान शान है

आरव वशिष्ठ

य स

“वाणी”

भाषा बोली मीठी वाणी

कड़वी, खट्टी साधारण वाणी पहचान यही है, मेरी तुम्हारी जैसा बोला वैसा

रसझा

आवहार कुशल बनकर तो देखो वाणी में रस भरकर तो देखो बैरी बन जाएँगे

अपने,

सुन्दर होंगे सबके सपने,

सम्मान पाना है, तो शब्दों को तौल- तौल कर बोलो, जब भी बोलो सच्चा

बोलो, जब भी बोलो मीठा बोलो ॥

वाणी ही है पहचान हमारी,

जी है हमको सबसे प्यारी,

भाषा बोली मीठी वाणी

कड़वी, खट्टी साधारण वाणी ॥

आरुष भट्ट

स्त्री

रूर गम जो अपना राम

अपनी मुस्कान में छुपाए,

उड़ने की आशा है उसके,

दिल में मगर उड़ न पाए

गाँवों में बैठी है वो,

कुई सपने छुपाए

किस्से वो जाके अपने ख्वाब, बतलाए.....।

हमेशा देखा है उसे अपने ,

सपनों की चिता पे जलते,

हमेशा देखा है उसे खुद को,

छोड़कर दूसरों के लिए,

जीते हुए

न जाने क्यों वो ऐसी है,

आशा है, कोई उसे जीना सिखाए,

जिंदगी क्या होती है

यह बतलाए.....।।

भविका पालीवाल

कक्षा ग्यारहवीं

नृत्य की धड़कन; पुरुष दृष्टि

क्यों कहते हो नृत्य मात्र कोमलता का दर्पण,
पुरुष भी नृत्यक हो सकते हैं, समर्पण का प्रतिमान।
शक्ति और भाव के संगम में,
र धड़कन में छिपी होती है नृत्य की पहचान।

नृत्य के मंच पर कदम बढ़ाते,
पुरुष भी बुनते हैं अनगिनत भाव,
उनकी थिरकन में है लय और ताल,
जो छू जाती है हर दिल की चाल।

सिर्फ कठोरता नहीं, उनमें कोमलता भी है,
र कदम में झलकती उनकी अपनी छवि है।
जब नृत्य करते हैं वे पूरे मन से,
तो झूम उठती है धरती भी उनकी गति से।

पुरुष भी नृत्य में पा सकते हैं सार,
हर भाव में छुपी होती उनकी जीवन की झंकार।
नृत्य कोई सीमा नहीं जानता,
पुरुष भी उसमें अपनी राह बनाता।



तो मत कहो कि नृत्य सिर्फ नारी का मान,

पुरुष भी इसमें ढूंढते हैं अपने अरमान।

हर ताल, हर लय के संग बहते हैं,

क्योंकि नृत्य में पुरुष भी निखरते हैं।

जय कुमार

रक्षा बारहवीं (ड)

शक्ति का स्वरूप है नारी

मैं नारी हूँ, मैं शक्ति हूँ,

मैं आदि, मैं ही भक्ति हूँ।

मैं ही पत्नी, मैं ही बहना

खुशी हो या गम हंस कर सब सहना

गाना मैंने सबका कहना,

हथकड़ियों को समझा गहना

पावों में डलवाकर डोरी, दिखलाई अपनी कमजोरी

झुझ पर बैठाया हर पल पहरा, जख्म दे दिया बहुत ही गहरा

पैने रखा तुम्हारा मान, तुम बस करते रहे अपमान

तुमने ना समझी मां की शान, तुमने ले ली बहनों की जान

पर बस अब मैं कुछ न सहूंगी, जंजीरों में बंधकर ना रहूंगी

आदि से बन जाऊंगी काली, नारी की महिमा है निराली,

नारी जब शक्ति बन जाती, पुरुषों की सत्ता हिल जाती

दुर्गा का अवतार है नारी, लक्ष्मी की तलवार भी नारी

पृथ्वी रूपी मां भी नारी, जिसमें समाई सृष्टि सारी



प्रकृति सी सुकुमारी नारी, गंगा की धारा भी नारी
नो तुम रोको, ना ही टोको, ना तुम करो मेरा अपमान
करना बहा ले जाऊंगी सब कुछ अगर बन गई मैं तूफान
पेरी शक्ति का पार कभी कोई पुरुष नहीं पा सकता
शायद इसीलिए वह कभी मां नहीं कहला पाता।

कविता शर्मा

शिक्षित स्नातक शिक्षिका

हिंदी



केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, चमकता हुआ सितारा है

धूम केतु सा आसमान में, विद्या की अमृत धारा है

उच्च कोटि की शिक्षा से, बचपन का निर्माण यहाँ

विज्ञानी दृष्टिकोण की शैक्षिक विचारधारा है

शिक्षा है जगत निर्माता, ज्ञान की अविरल धारा है

भारत भाग्य विधाता हो, हम सबके मन का नारा है

विद्यालय शिक्षार्थ आईये, दृढ़ निश्चय सेवार्थ जाईये

चेहरे पर मुस्कान सदा हो, शिक्षा यही इशारा है

तुम्हे मुझे बच्चों की, उम्मीदों का तारा है

खेल में विज्ञान सीखना, अद्भुत बड़ा नजारा है

दृढ़ प्रतिज्ञ और ज्ञान दायनी, शिक्षा बहती चारों ओर

कुस्तक बैठ के पढ़ने का, मजा बड़ा ही प्यारा है

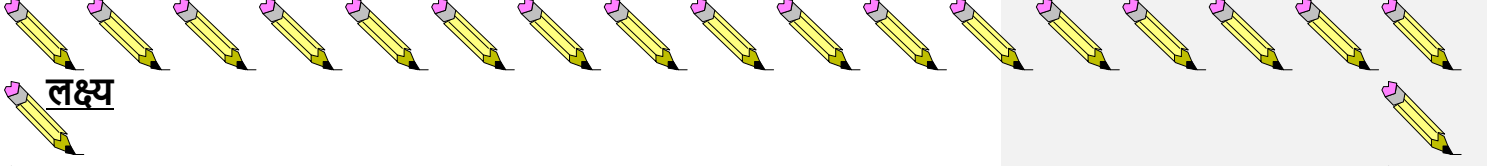
शिक्षा मानवता की सृजनी, जीवन का उजियारा है

पढ़ना की स्रोत किताबें, ज्ञान का फव्वारा है

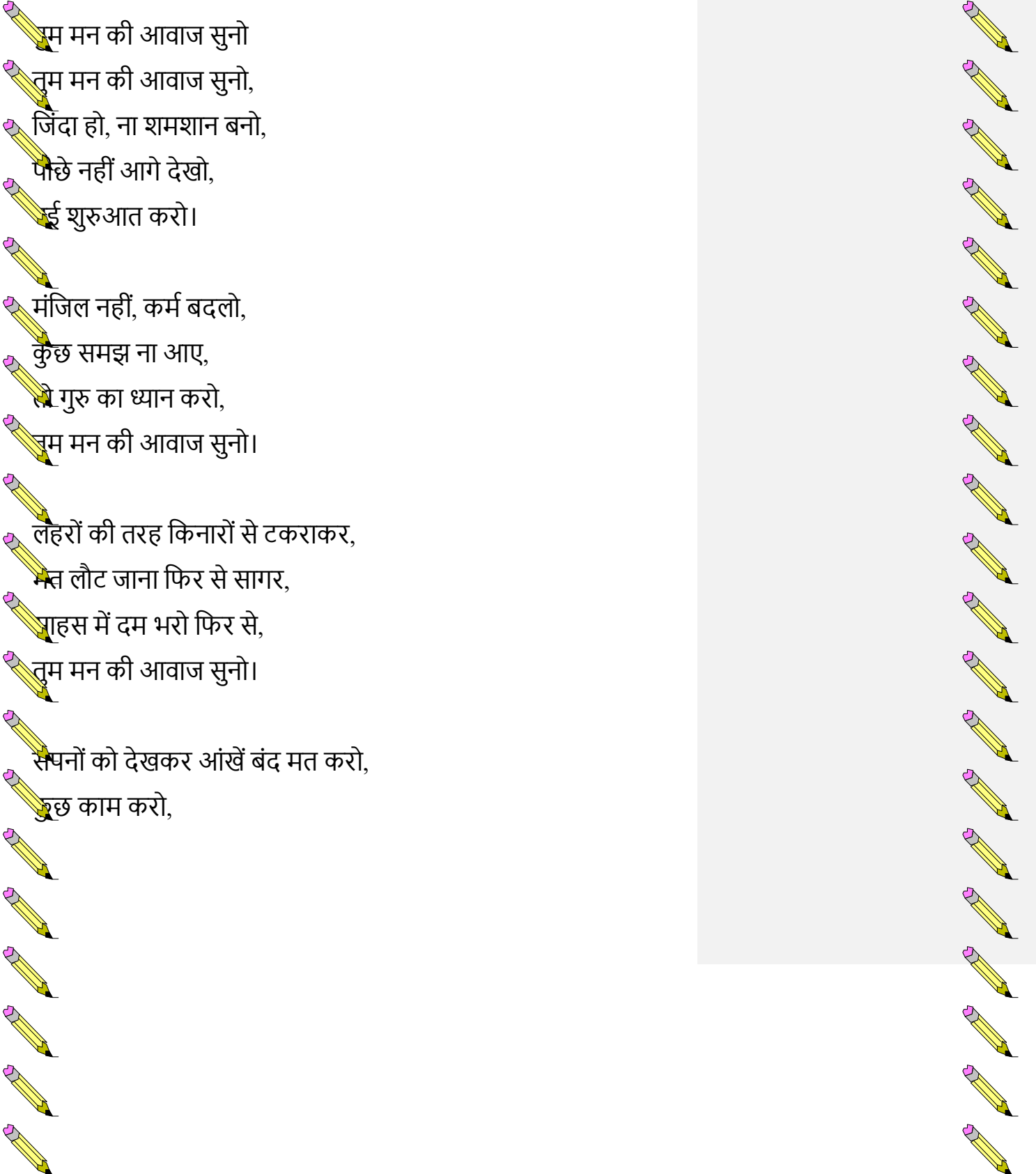
मानव मूल्य का मान बढ़ाएं, विद्या सब में अलख जगाए

एक है भारत श्रेष्ठ भारत, यह अभियान हमारा

स्तुति नौटीयाल (6th ब)



लक्ष्य



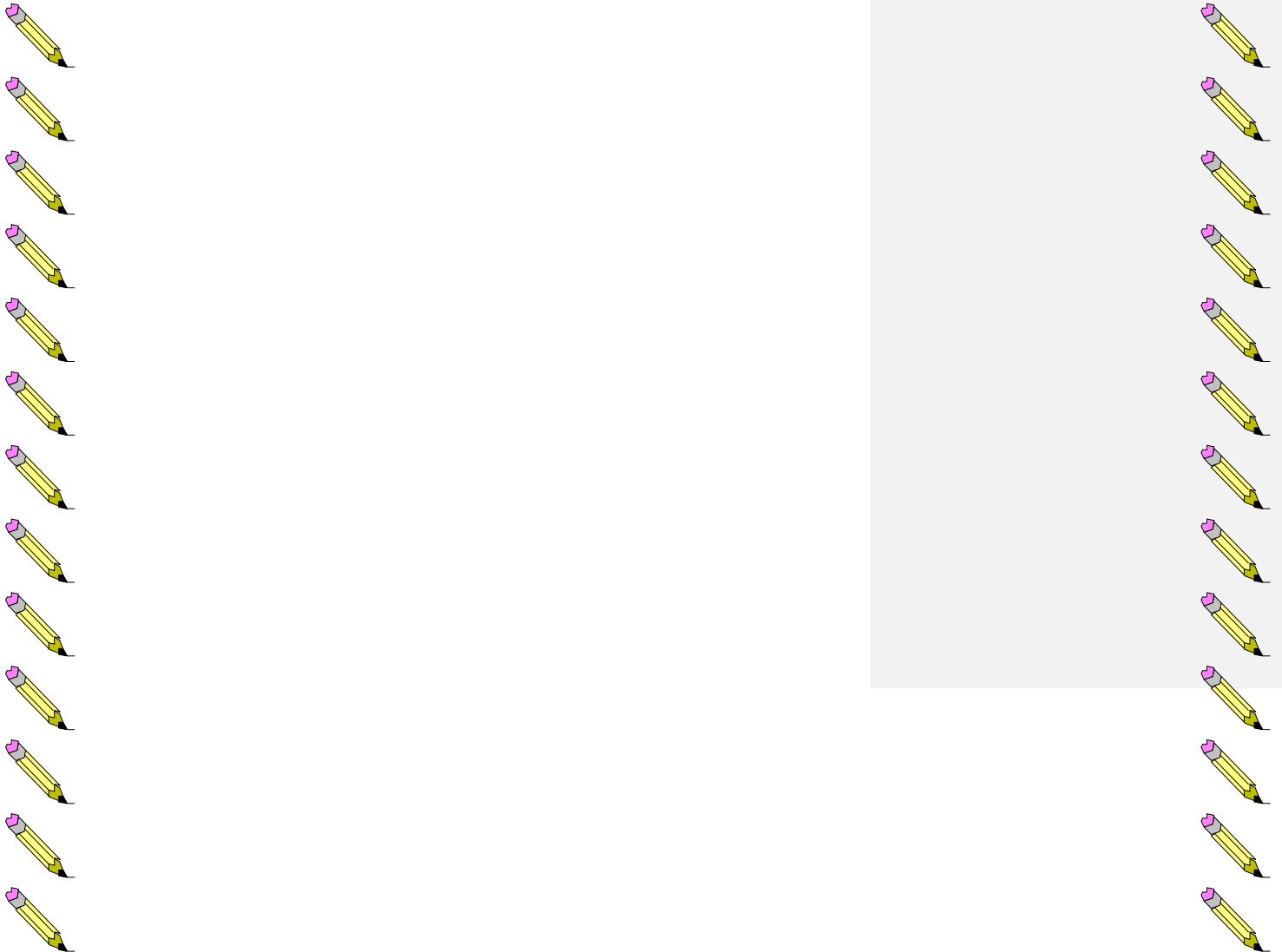
तुम मन की आवाज सुनो
तुम मन की आवाज सुनो,
जिंदा हो, ना शमशान बनो,
पीछे नहीं आगे देखो,
ई शुरुआत करो।
मंजिल नहीं, कर्म बदलो,
कुछ समझ ना आए,
गुरु का ध्यान करो,
तुम मन की आवाज सुनो।
लेहरों की तरह किनारों से टकराकर,
मत लौट जाना फिर से सागर,
ग्राहस में दम भरो फिर से,
तुम मन की आवाज सुनो।
सपनों को देखकर आंखें बंद मत करो,
कुछ काम करो,



सपनों को साकार करो,
तुम मन की आवाज सुनो।

इम्तिहान होगा हर मोड़ पर,
हार कर मत बैठ जाना किसी मोड़ पर,
तकदीर बदल जाएगी अगले मोड़ पर,
तुम अपने मन की आवाज सुनो।

स्तुति नौटीयाल
6th ब



बेटी बचाओ

मैं भी लेती श्वास हूं

पत्थर नहीं इंसान हूं

कोमल मन है मेरा

वही भोला सा है चेहरा

ग़ज़बानों में जीती हूं

बेटा नहीं, पर बेटी हूं

कैसे दामन छुड़ा लिया

जीवन के पहले ही मिटा दिया

दुःख से ही बनी हूं

तुस प्यार की भूखी हूं

जीवन पर लगा दूंगी

अपनालों, मैं बेटा भी बन जाऊंगी

दिया नहीं कोई मौका

तुस पराया बनकर सोचा

एक बार गले से लगा लो

फिर चाहे हर कदम आजमा लो

हर लड़ाई जीत कर दिखाऊंगी

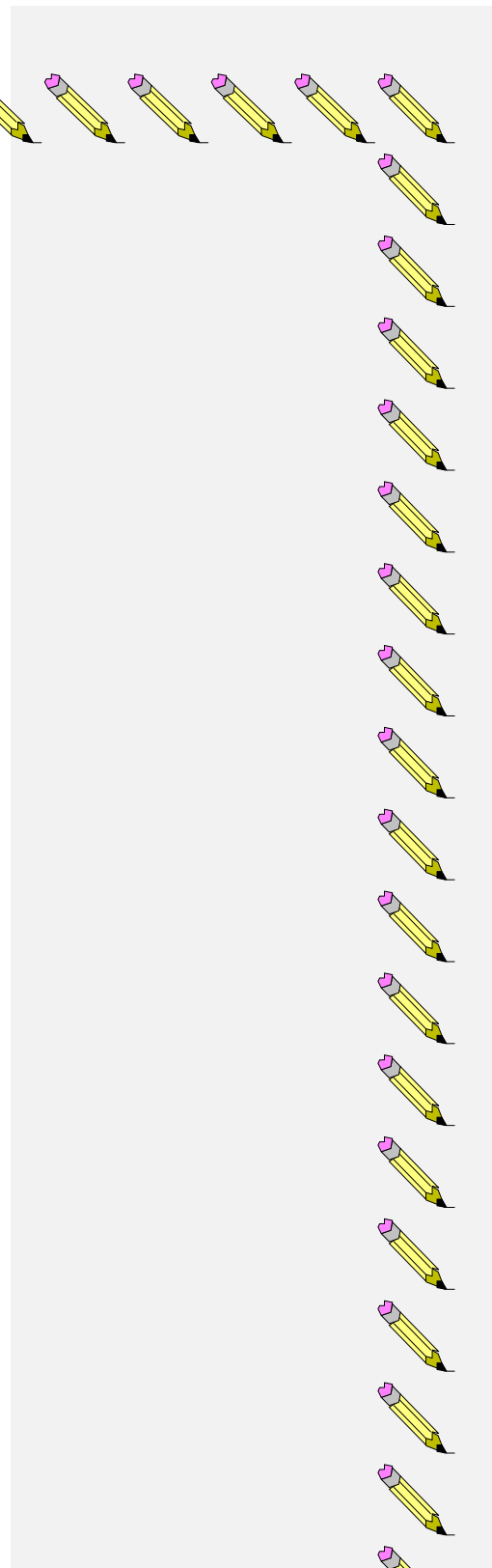
भग्नि में जलकर भी जी जाऊंगी

चंद लोगों की सुन ली तुमने



मेरी पुकार ना सुनी
में बोझ नहीं, भविष्य हूं
बेटा नहीं, पर बेटी हूं

इशिका
ग्यारहवीं



शिक्षक

ज्ञान देती है, नवजीवन

पिता सुरक्षा देते हैं

लेकिन सच मानवता

शिक्षक ही जीवन में भरते हैं

सत्य न्याय ने पथ पर चलना,

शिक्षक हमें सिखाते हैं

जीवन- संचार से लड़ना,

ज्ञान – दीप की ज्योति जलाकर,

मन को आलोकित करते हैं

शिक्षा ईश्वर से भी बढ़कर,

यही कबीर बताते हैं

शिक्षक ही इस जो बच्चों को,

मंजिल तक पाहुंचाते हैं

शिक्षक को प्रणाम करो तुम,

शिक्षा का करो सम्मान ।

अश्मी वालिया (कक्षा = 6 ब)

वक्रत नही

पर खुशी है लोगों के दामन मे,
पर हँसी के लिए वक्रत नहीं,
दिन रात दो
दाढ़ती दुनिया मे,
निंदगी के लिये वक्रत नहीं।
माँ की लोरी का अहसास तो है ,
पर माँ को माँ कहने का वक्रत नहीं है,
सारे रिश्ते को तो हम मार चुके है,
पर उन्हें दफनाने का वक्रत नहीं हैं
अपनों से बात करने का वक्रत नहीं है।
आंखों मे नींद है बड़ी,
पर सोने के लिए वक्रत नहीं है,
दिल है गमों से भरा,
पर सोने के लिए वक्रत नहीं है।

स्तुति नौटीयाल

ना डरो कभी

मुझे तुमसे जो कहना

सुनो लड़कियों उसे ध्यान से ।

कोई घूर के देखे जो तुमको ।

तो नज़रे नीची ना करना

ना डरना ना झंपना किसी से ।

अगर देखे कोई बुरी नजर से ।

तो देखना उसे वापस घूर कर और पूछना जोरदार आवाज में ।

अरे! क्या देख रहा है?

प्रदया खंकरियाल (6 ब)

मेरी धरती मां

धरती मेरी माता है, इससे गहरा नाता है

ये पहचान हमारी है, ये ही शान हमारी है

यह है दुनिया की सरताज, इस पर करते हम सब नाज

मेरा भारत, मेरा प्यार, कैसे करें कोई इंकार

इसने दिया विद्या का दान, इसकी गाथा गा रहा जहां

इसकी नदियों का सुंदर जल, बह रहा करता कल-कल

हिमालय इसका मुकुट निराला,

जिससे निकली निर्मल जलधारा।

चरणों में बहता सागर, यशोगान को करता उजागर

इसकी मिट्टी कितनी प्यारी, जिसकी रक्षा जिम्मेदारी

करते देश से असीमित प्यार, सीमा के वो पहरदार

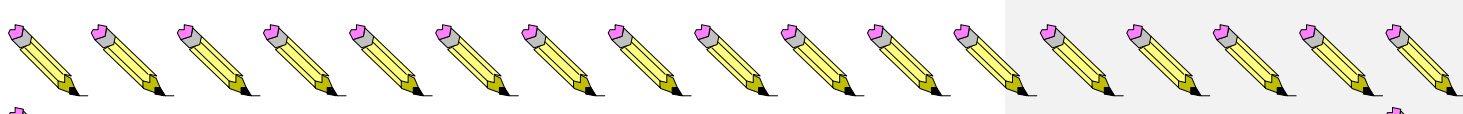
इसे नाज है अपने वतन पर, ये तो शान हमारी है।

इसकी सुरक्षा करना, हम सब की जिम्मेदारी है...

हम सब की जिम्मेदारी है।

भारव वशिष्ठ

VI स



जीवनदाता

माता पिता के ऋण से उऋण हो नहीं सकता कोई कभी,
यह तो वह ऋण है प्यारे जो चुका ना सकते जीते जी।
माता ने जीवन दिया है, पिता ने हमको पाला है
अपनी खुशियां ताक पे रखकर, लहू से किया उजाला है।

माता दीप की निर्मल ज्योति, हमको प्रकाश दिखाती है
पिता सूर्य के समकक्ष है जो हमको जलना सिखाते हैं।
माता नदी की कोमल धारा, निर्मल जल जो पिलाती है
पिता सागर का खारा पानी, अटल रहना सिखलाते हैं।

माता होती करुणा की मूरत, पिता है बलिदानों की खान
यदि जरूरत पड़ जाए तो
ताक पे रख दें अपने प्राण।

माता हमारी आंखों की तारा, पिताजी सिर का ताज है
हमें फक्र है माता-पिता, इस जीवन के सरताज है।

इस जीवन के सरताज है।

भूल के भी जीवन में इनको ,कभी कष्ट न देना तुम





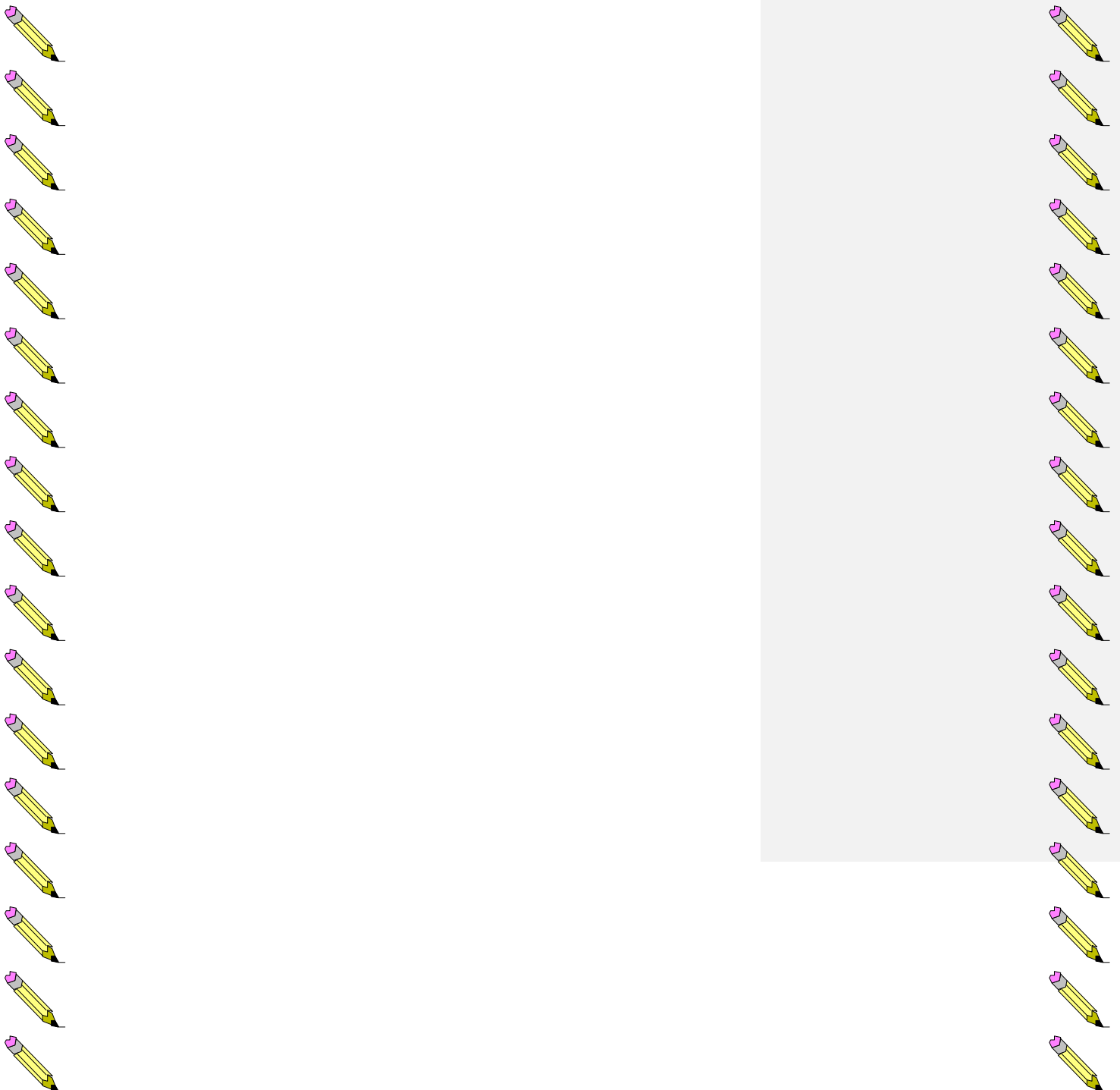
मान बनाएं रखना इनका ,शीश को झुका करके तुम ।

शीश को झुका करके तुम॥

कविता शर्मा

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका

हिंदी



याद है नानी का घर

याद है,

वो दिन..... याद है, वो बचपन.....|

याद है....

नानी के घर जाने के लिए हर वर्ष गर्मियों की छुट्टियों का उत्सुकता से इंतजार करना|

याद है....

नानी के घर जाने के लिए जाने के लिए टिकट आरक्षण के लिए परीक्षा कार्यक्रम का इंतजार करना|

याद है....

नानी के घर जाने के इंतजार में परीक्षा के दौरान मन लगाकर पढ़ना|

याद है.... अलग-अलग रेलवे स्टेशनों पर ट्रेन का रुकना व वहां की प्रसिद्ध खाना और वस्तुएं खरीदना|

याद है....

खुशनुमा सुबह में ट्रेन का गंतव्य स्थान तक पहुंचना और उतरने से पहले ही कुलियों का ट्रेन में आ जाना|

याद है....

कुली द्वारा हमें तांगे तक पहुंचाना, उसकी फूलती हुई सांसे और उसके शरीर से वो बहता पसीना|

याद है....

तांगे वाले द्वारा उस शहर में आते बदलाव के बारे में बताना|



याद है....

तौगे का नानी के घर पंहुचते भी मामा का भागकर हमारे पास आना।

याद है....

नानी के घर के पड़ोसियों द्वारा हमें देखकर खुश हो जाना ।

याद है....

नानी के घर के सभी बच्चों का हमें देखकर खुशी का ठिकाना ना होना ।

याद है...

मामाजी द्वारा ऑफिस जाने से पहले रोज सभी बच्चों को गाड़ी पर बैठाकर

घुमाना और चॉकलेट चीजे चीज दिलवाना।

याद है....

दिनभर रेहड़ी / ठेलों वालों का आना-जाना और रात में मटका कुल्फी वाले

का आना और उसकी कुल्फी खाना।

याद है....

मरे द्वारा गलती करके दूसरों को डांट लगवाना।

याद है....

नानी के घर पर 1-2 महीनों का 8-10 दिनों जैसे बीत जाना।

याद है....

हमें वापस ले जाने के लिए पापा का नानी के घर आना और फिर अपने घर

आना।

याद है....





फिर से गर्मियों की छुट्टी बीत जाने के बाद स्कूल जाना,
पढाई करना और अगले वर्ष फिर से नानी के घर जाने के लिए हर वर्ष गर्मियों
की छुट्टियों का उत्सुकता से इंतजार करना।

याद है, वो दिन..... याद है, वो बचपन.....।

अरविन्द सिंह पंवार

वरिष्ठ सचिवालय सहायक

